What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 36	5/2014-15	MONTHLY	November 2014

Wishing everyone a Happy Diwali and a Prosperous New Year

- **Diwali celebration & Chairty Dinner on Saturday 8th November 2014. Starting at 6.30pm with Havan followed by classical dance, dinner and evening of Sangeet and Gazals.** **(Please see page 19 & 20 for detailed information)**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
ERSKINE STREET, NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

We Welcome the Adversities	**Krishan Chopra**	**3**
अध्यात्म के शिखर पर-१४	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**5**
सँस्कार-७	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**7**
गायत्री महायज्ञ- ७ सितम्बर, २०१४-विवरण		**11**
Dear life members	**Dr. N Kumar**	**13**
The 10 Principles of Arya Samaj		**15**
Matrimonial Get-together report		**16**
Matrimonial Advert		**17**
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)		**18**
Note to all Members	**Dr. N Kumar**	**19**
Celebrate Diwali		**20**
News (पारिवारिक समाचार) and Events		**21**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays - Closed
Tel. 0121 359 7727

We Welcome the Adversities

नमोऽस्तु ते निर् ऋते तिग्मतेजोयस्मयान्वि चृता बन्ध पाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित्त्वां ददाति तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्वये ॥ अथर्ववेद ६.६३.२

namoastu ta nirrite tigmatejo ayasmaan vichritaa bandhapaashaan l
yamo mahyam punarit tvaaam dadaati tasmai yamaaya namo astu mrityave ll

Atharva 6.63.2

Meaning in Text Order

Namah astu = we salute
Te = you
Nirrite = clamaties
Tigmatejah = harsh misery
Ayasmayaan = iron made
Vichchritaa = break
Bandh paashaan = iron fetters
Yamah = the controller
Mahyam = for me
Punah it = again also
Tvaam = to you
Dadaati = endowed with
Tasmai = that
Yamaaya = the lord who controls
Namah = obeisance
Astu = to you
Mrityave = the destroyer (death).

Meaning

O grave calamities! We salute you. O gravid misery! Through you we cut our bondages of iron fetters. O The ordainer of our destiny! Give this opportunity to loosen the bondages of our sins. Our appreciation to the destroyer yama and we pay our homage to the controller of the universe.

Contemplation

No one wishes to face the adversities, miseries or calamities in the life though we know very well that they are an integral part of our life. Life is mixture of sunshine and shade and the sufferings follow us like our shadow. The prayer of this mantra teaches us that all the adversities, sufferings of our life are for our betterment. The devotee welcomes the miseries and calamities, salutes them because these will provide him an opportunity to cut their bondages of sins. We commit sins and tie ourselves in the bondages and these adversities play a vital role to cut those bondages. Through these sufferings we avail an opportunity to cut our bondages. Indeed, they are blessings in disguise.

Severe adversities will cut the bondage of our great sins. Therefore O adversity! We are not afraid of you. We welcome you with pleasure. We faced the miseries before but they were not so massive. We feel this time the severe suffering will cut our bondages which are heavy like iron fetters which are difficult to cut. Due to these bondages our progress was at halt.

We offer our homage to the Lord who is yama, the controller of the universe. His act of destruction is for our welfare. Therefore, we welcome all the adversities sent by Him.

By Krishan Chopra

अध्यात्म के शिखर पर-१४

आचार्य उमेश यादव

ईश्वर का सम्यग्ज्ञान ही जीवन का उचित मार्गदर्शन है -

कई लोग ऐसा समझते हैं और कहते हैं कि ईश्वर तो निष्क्रिय और निर्गुण है । यहाँ निष्क्रिय का अर्थ निकम्मा से और निर्गुण का अर्थ गुणरहित होने से है । मगर ऐसी बात नहीं है । ईश्वर तो सक्रिय है और गुणों का भण्डार है । हाँ, उसके समान या उससे अधिक क्रियावान्कोई अन्य नहीं । उसके बराबर और उससे अधिक गुणवान भी अन्य कोई नहीं । श्वेताश्वतर उपनिषद्६/८ का यह प्रमाण समझने योग्य है । " न तस्य कार्यं करणं च विद्यते, न तत्समश्चाधिकश्च दृश्यते । परास्य शक्तिर्विविधैव श्रुयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च "। अर्थात्परमेश्वर का कार्य और करण भिन्न नहीं हैं । जैसा परमेश्वर का गुणकर्मस्वभाव है , वह वैसा ही कार्य भी करता है ; इससे भिन्न कभी नहीं । उसके कार्य अनेक प्रकार से हैं क्योंकि उसके गुण-कर्म-स्वभाव अनेक हैं । ज्ञान, बल, क्रिया सब उसकी स्वभाविक शक्ति है । चुके, वह अनन्त ज्ञान, अनन्त बल, अनन्त क्रिया का स्वामी है अत: वह अपने ज्ञान, बल और क्रिया की अनन्तता ही जानता है विल्कुल ठीक बात है कि वह जब स्वयं सान्त वा सीमित नहीं है तो अपना परिचय सान्त वा सीमित के रुप में कैसे दे सकता है ? अत: यह जानना समुचित ही है कि सान्त को अनन्त और अनन्त को सान्त समझना और इसी प्रकार सीमित को असीमित और असीमित को सीमित जानना तो निश्चित ही भ्रम है पर यह भी जाने कि ईश्वर का ज्ञान सर्वथा भ्रमरहित है, शुद्ध है; पवित्र है । न केवल उसका ज्ञान ही शुद्ध-पवित्र है अपितु वह स्वयं भी सर्वथा शुद्ध और पवित्र है । "अपापविद्धम्"-यजुर्वेद ४०.८ वह पाप

से विद्धा हुआ नहीं है, उसका कार्य पापयुक्त नहीं हैऔर उसकी चाहत भी पापमय नहीं है , यही कारण है कि ईश्वर सबका सदा भला ही करता है । संसार में दोष जो भी है वह सब हमारा है अर्थात्मनुष्यों के स्वाभाविक व्यवहार में है न कि ईश्वर का । परमेश्वर यथार्थदर्शन करता है -यही ज्ञान-विज्ञान का सही परिचय है । इसका उलटा सब अज्ञान है । पातँजलि योगसूत्र २४, समाधिपाद-" क्लेशकर्मविपाकशयैरपरामृष्ट: पुरुष विशेष: ईश्वर:"। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इस सूत्र को उद्धृत करके ऐसा अर्थ लिखा है -जो अविद्यादि क्लेश, कुशल-अकुशल, इष्ट-अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहाता है । यहाँ स्पष्ट ही ईश्वर और जीव में भेद बता दिया गया । ईश्वर अविद्यादि क्लेशों से रहित है पर जीव अविद्यादि क्लेशों से प्रभावित है । कुशल-अकुशल, इष्ट(चाहत)-अनिष्ट(अनचाहत), मिश्र(सुख-दु:ख) फलदायक कर्मों की वासना से सर्वथा रहित ईश्वर है पर जीव इनसे प्रभावित है ।

स्पष्ट है कि जीव जो शरीर धारी होकर सुख-दु:ख को भोगने हेतु तदुत्पादक कर्मों को करता है । परमेश्वर को सुख-दु:ख भोगने की जरुरत नहीं है अत: उसे शरीर धारण कर सीमा में बन्धने की जरुरत भी नहीं है ।

अत: ईश्वर एक है पर जीव अनेक । ईश्वर व जीव दोनों चेतन हैं पर ईश्वर सर्वव्यापक होकर सर्वत्र विद्यमान हो रहा है लेकिन वहीं जीव अलग-अलग शरीरों में आकर भोग-प्रक्रिया से जन्म-जन्मान्तर का भोग भोग रहा है और इस प्रकार जीव ही जन्म और मृत्यु के बन्धन में पड़ता रहता है । ईश्वर तो सदा सर्वदा सबका फलदाता और नियामक है ।

सँस्कार-७

आचार्य डॉ. उमेश यादव

गर्भाधान के विधि भाग से ज्ञातव्य बातें-

१. गर्भाधान सँस्कार में पत्नी वेदी में वायीं ओर बैठती है । इसी तरह नामकरण और निष्क्रमण सँस्कार में भी । कारण है कि ये तीनों सँस्कार में पत्नी व वच्चे को अधिक सुरक्षा की आवश्यकता है । पति कहना चाहता है कि मैं तुम्हें अपना हृदय रुपी रक्षा प्रदान कर अपने हृदय के पास रखना चाहता हूँ । पति के हृदय के पास पत्नी बैठे तो वह पति की वायीं ओर ही हुआ । पत्नी को ऐसी अवस्था में न केवल शारीरिक रक्षा चाहिये अपितु मानसिक रक्षा भी चाहिये । पति ने जब अपना हृदय दे दिया है तो इससे अच्छा सुरक्षा स्थान पत्नी के लिये और कोई नहीं हो सकता । पत्नी जब पति के हृदय के पास है तब उसे कोई डरने की बात नहीं है । पति जी जान से, उत्साह और शक्ति से अपनी पत्नी को देये वचन को निभायेगा अर्थात्उसकी पूरी रक्षा करेगा । पत्नी भी पूर्णरुप से चिन्तारहित होकर गर्भस्थ संतान के समुचित विकास का ख्याल रखकर आगे बढ़ती रहेगी, पति की पीछे-पीछे चलती रहेगी । वायीं ओर रहना पीछे रहने का प्रतिक है और दायीं ओर रहना आगे- आगे बढ़ने का प्रतिक है । तभी अन्य सँस्कारों व यज्ञ-कार्यों में पत्नी दायीं ओर बैठने लगती है । वह कहना चाहती है कि अब मैं समझदार, सँस्कारित और यज्ञीय कर्मों से सुपरिचित हो गयी हूँ अत: अब मैं सदैव आपका दायां हाथ बनकर आपकी शक्ति बनी रहूँगी । मनु महाराज ने ठीक ही कहा- "यज्ञ-कर्म विवाहेषु पत्नी तिष्ठेत्दक्षिणाम्"-मनुस्मृति ।

नामकरण सँस्कार और निष्क्रमण भी कुछ इन्हीं भावनों से जुड़े हुये हैं । नामकरण सँस्कार में पिता ही अपने अधिकार में लेकर उसे नाम प्रदान करता है । माँ वच्चे को पीच्छे से जाती हुयी पिता के गोद में ही पहले वच्चे को सौंपती है । पिता पूरी सुरक्षा व प्यार देता हुआ पूर्ण अधिकार से वच्चे को नाम देता है; सबके वीच घोषणा करता है कि हमारे वच्चे का अब "अमुक" नाम रहेगा । जैसे राहुल, रश्मी, आदि । इसी भाव से पत्नी और वच्चे को पूरी सुरक्षा प्रदान करने का वचन देता है । निष्क्रमण सँस्कार में भी यही भाव है । निष्क्रमण सँस्कार में वच्चे को किसी धार्मिक स्थान या कोई अन्य मनोरम वाग-वगीचा जैसी खुली जगह ले जाना होता है । ऐसी जगह भी छोटा वच्चा होने के नाते उसे सम्भालने में पति का सहारा अधिक चाहिये । अत: यहाँ भी पत्नी पति की वायीं ओर ही होती है ।

२. गोत्र-परिवर्तन-विचार- वस्तुत: विवाह सँस्कार में विभिन्न वचनों से बन्ध तो जाते हैं पर गोत्र परिवर्त्तन नहीं होता । कन्या दान (प्रतिग्रहण विधि) में दोनों अपना गोत्र का परिचय दे देते है । यहाँ पत्नी कहती है कि मैं पति के तेज को ही अपने गर्भ में संतान के रुप में ग्रहण कर रही हूँ इस लिये मैं पति के गोत्र को अब ग्रहण करती हूँ । गर्भाधान सँस्कार ठीक विवाह के बाद ही बल्कि चौथे दिवस ही होता है, इसे कहीं-कहीं चौठारी भी कहा जाता है, और यही साथ-साथ रहने का प्रारम्भ भी है, अत: यहीं पर गोत्र परिवर्त्तन उचित भी प्रतीत होता है । फलत: इस सँस्कार में गोत्र परिवर्त्तन की विधि प्राप्त है । फिर व्यावहारिक तौर पर तो सही पति-पत्नी गर्भाधान प्रक्रिया द्वारा एक साथ होने पर ही है । विवाह में वचनवद्ध होना और यहाँ व्यावहारिक रुप से एके हो जाना । यही पति-

पत्नी का एक दूजे के लिये पूर्ण समर्पण है । वैसे भी हर पत्नी को विवाह के बाद पति के कुल में ही आना होता है । यही कारण है कि विवाहोपरान्त हर पत्नी पति का गोत्रोचित उपनाम (सर्नेम) लिखना स्वीकार करती है । ये सारी व्यावहारिक प्रक्रियायें एक पत्नी को पति का गोत्र पाने का अधिकार दे रही हैं । इसी कारण आने वाली संतान का गोत्र भी पिता का गोत्र ही होगा । वैदिक परम्परा भी यही है ।

३. गर्भाधान सँस्कार में वीच भाग की विधियों में ५-५ मंत्रों की युगल छाया में कुछ इस प्रकार महत्त्वपूर्ण प्रार्थनायें की गयीं हैं जो ये भी समझना आवश्यक है--

१. अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य तथा इन सब से एक साथ प्रार्थनायें की गयीं हैं कि हमारे जीवन में धर्मानुकूल लक्ष्मी (धन-दौलत) हो न कि अधर्म से अर्जित पापी लक्ष्मी ।

२. पत्नी पतिघ्नी तनू: न स्यात्अर्थात्पत्नी विधवा न हो ।

३. स्त्री अपुत्र्या: तनू: न स्यात्स्त्री निसंतान न हो ।

४. अपसव्या तनू: न स्यात्पति के प्रतिकूल चलने वाली न हो ।

५. पत्नी के मन व शरीर में कोई दोष न रहे ताकि वह व्यवहार से भी शुद्ध हो सके ।

६. स्त्री गर्भस्थ संतान को नौ मास तक भलिभाँति सन्भाल सके । भलिभाँति का यहाँ अर्थ यही है कि वह भौतिक व मानसिक तौर पर पूर्णत: स्वस्थ रहे और स्वस्थ संतान को जन्म दे ।

७. पत्नी द्वारा पति का दायां स्कन्ध (कन्धा) छूना परस्पर प्रगाढ़ प्रेम व समर्पण दिखलाना है ।

८. सुदृढ़ गर्भ, शतायुष्य और इससे भी अधिक आयु, स्वस्थ तथा तेजस्वी संतान की प्रार्थना की गयी है ।

८.जल-पात्र में वीच-वीच में यजमान द्वारा आहुत घी की बून्दें छोड़ने का विधान है । इस जल को मलकर स्त्री नहावे और शुद्ध वस्त्र धारण कर फिर वेदी में आवे और पति-पत्नी दोनों कुण्ड की प्रदक्षिणा करते हुये सूर्य का ख्याल करें । यह सब यज्ञ की पूर्णता का परिचय है । सूर्य सदृश तेजस्वी संतान हो; ऐसी भावना कर यह कार्य करना और परमेश्वर से सफलतार्थ प्रार्थना करना समुचित ही है ।
यहीं पति का गोत्र नाम लेकर पत्नी पति का आदर करके सब उपस्थित श्वसुर आदि बड़े जनों का भी अभिवादन करे ताकि वह जीवन में पितृ यज्ञ का महत्त्व समझ सके और तदनुरुप जीवन में व्यवहार भी करती रहे ।

९. सर्वौषधियुक्त आहर, शुद्धाहार-विहार का महत्त्व जानना.

१०. समयानुसार केसर, कस्तूरी, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची आदि युक्त थोड़ा गर्म थोड़ा शीतल दूध का सेवन गर्भवती स्त्री करती रहे ताकि स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल व निरोग संतान प्राप्त हो ।

इस प्रकार गर्भाधान सँस्कार-विचार सम्पन्न हुआ । अब आगे पुँसवन सँस्कार की बात करेंगे ।

ओ३म्

गायत्री महायज्ञ- ७ सितम्बर, २०१४-विवरण

गायत्री महायज्ञ एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान माना जाता है । आर्य समाज वेस्टमिडलैंड्स में हर वर्ष यह बड़े ही उत्साह के साथ वार्षिकोत्सव के रुप में मनाया जाता है । हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी इस महायज्ञ में बर्मिंघम और निकटवर्ती प्राय: सभी शहरों से श्रद्धालु लोगों ने भाग लिया और आयोजित ४ हवन्कुण्डों पर अलग-अलग बारी में पधार कर अत्यन्त श्रद्धा व प्रसन्नता पूर्वक आहुतियाँ दी । यह कार्यक्रम ७ सितम्बर २०१४ रविवार को आयोजित हुआ था जिसमें लगभग १५० से अधिक ही स्त्री-पुरुष, वच्चे-बड़े सभी आयु के लोगों ने भाग लिया ।

आचार्य डॉ. उमेश यादव, "स्थानीय धर्माचार्य" इस महा यज्ञ को अत्यन्त रोचकता से वीच-वीच में गायत्री मंत्र व यज्ञ की महिमा बताते हुये दान, सेवा, परोपकार, जिम्मेवारी, सँस्कार व मानवीय अन्य मूल्यों का विस्तार से व्याख्यान करते रहे जिससे यह कार्यक्रम सबके लिये आकर्षक और सार्थक बना रहा । आचार्य जी ने यज्ञोपवीत, वैदिक परम्परा, संस्कृति व सँस्कारों को भी वीच-वीच में बताकर सबको विशेष कर वच्चों व युवाओं को प्रेरित किया ।

इस महायज्ञ के खर्च की जिम्मेवारी डॉ. (श्रीमती) सरोज अधलखा ने

पूर्णरुप से ली । ऋषि-लंगर, यज्ञ के लिये सामग्री आदि सारी व्यवस्था

इनकी ओर से ही की गयी । फिर भी कुछ श्रद्धालुओं ने अपनी ओर से भी

कुछ सामान यज्ञ के लिये दिये । जहाँ श्रीमती गगन मल्होत्रा ने हल्वा परसाद बनाया, वहाँ श्री हरीश मल्होत्रा ने केले और डॉ. नरेन्द्र कुमार ने सेव फल परसाद के लिये प्रदान किये । सूखा मेवा, घी, सामग्री आदि यज्ञ-सामान श्री राजीव दत्ता, श्री जोगेन्दर पाल सेठ, डॉ. पुरुषोत्तम दास गुप्ता ने भी दिया । सभी उपस्थित श्रद्धालुओं नें अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार परसाद ग्रहण करके आर्य समाज को दान भी दिया जो कुल मिलाकर लगभग १४०० पौंड धनराशि इकत्रित हुयी । महायज्ञ के अन्त में आचार्य जी ने सबको विधिवत्आशीर्वाद दिया । तत्पश्चात्समारोह "ओ३म्ध्वज" को फहराकर आगे बढ़ाया गया । श्री कृषण चोपड़ा और संस्था के ट्रस्टी-प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार द्वारा मिलकर "ओ३म्ध्वज" विधिवत्लहराया गया । "जयती ओ३म्ध्वज-व्योम्विहारी" नामक सामुहिक गीत गाया गया ।

अन्त में संस्था के ट्रस्टी-प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार ने आचार्य जी द्वारा लिखित दान विषय पर अत्यन्त सारगर्भित व प्रेरक निबन्ध पढ़ा तथा सब भागीदारी लोगों को विधवत्धन्यवाद किया । दान-दाताओं को, पधारे सब श्रद्धालु लोगों को, सब सेवा प्रदान करने वाले लोगों को और खासकर कार्यक्रम के खर्च की पूरी जिम्मेवारी लेनेवाली श्रद्धालु महिला मान्या डॉ. सरोज अधलखा जी को हार्दिक धन्यवाद यापन किया ।

इस प्रकार शाँति-पाठ, जयघोष और फिर ऋषि-लंगर (प्रीति-भोज) के साथ उक्त कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह व सुख भरी अनुभूतियों के साथ सम्पन्न हुआ ।

Dear life members

On 14th August 2014 I wrote and posted a letter informing you all about the cost of printing, publishing and posting of Aryan Voice.

We had a very encouraging response.

We are publishing that letter in Aryan Voice just in case you may not have read my letter.

It is my humble request to those of you who have not given any donation to Arya Samaj West Midlands in last 12 months please donate now.

The Board of trustees will take decision in October 2014 regarding sending Aryan Voice to those life members who have not made any kind of donation to Arya Samaj West Midlands till October 2014.

Dated 14th August 2014

Dear Mr/Mrs
I hope you are keeping well.
It has been a long time since I wrote to you as individually.

On 27th July 2014, Annual General Meeting of Arya Samaj West Midlands was held.
Secretary report and Accounts for financial year 2013-2014 were read and discussed.
Unfortunately Arya Samaj West Midlands made a loss of £14120. This loss is mainly due to the mismanagement of finances by the previous Executive Committee under guidance of ex-President Dr. Vidhu Mayor.

It costs about £3000 per month to run our Samaj.

As written in the letter of notice for AGM, I informed the members about cost of Aryan Voice.

The cost of printing and posting of our monthly bulletin Aryan Voice in year 2012-2013 was £6793.45 and year 2013-2014 was £5474.

As the above figures show we are trying our best to cut down the costs as much as possible.
A thorough discussion took place at the AGM.
In the end it was decided that-

1. **Life members, who would like to receive Aryan Voice every month by post, as it is now, will be requested to pay £15 per year in order to cover the cost of printing and postage.**

2. **Life members who would like to receive Aryan Voice via email will be requested to pay £10 per year.**

Please you decide how you would like to receive your copy of Aryan Voice from the month of November 2014.

A Standing Order form is enclosed. Please fill it in and post it to Arya Samaj at above address.

I must say that the above amounts are purely to cover the cost of Aryan Voice publication and postage.
I sincerely hope that you will help your Arya Samaj to recover financially and carry on with Ved Prachar.
I must say that you will continue with all the privileges and facilities as a life member, as enshrined in our Constitution.

Kind regards.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar
Chairman - The Board of Trustees

The 10 Principles of Arya Samaj

1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.

2. God is existent, formless and unchangeable. He is incomparable, omnisicient, unborn, endless, just, pure, merciful, beginningless, omnipotent, the support and master of all, omnipresent, unageing, immortal, fearless, eternal, and holy, and the creator of the universe. To him alone is worship due.

3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, teach and recite them to others and hear them being read.

4. All persons should always be ready to accept the truth and to give up untruth.

5. All our actions should be according to the principles of Dharma, i.e. after differentiating right from wrong.

6. The primary aim of the Arya Samaj is to do good to the whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.

7. All ought to be treated with love, justice, and according to their merits as dictated by Dharma.

8. We should all promote knowledge (vidya) and dispel ignorance (avidya).

9. One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.

10. In matters which affect the well-being of all people the individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority; in matters that affect him alone he is free to exercise his human rights

Matrimonial Get-together

Matrimonial get-together was held on 18th October 2014 at Arya Samaj Bhavan in Birmingham.

It was another successful get-together attended by thirty two participants. There was very good feedback and all the participants were happy with the format and the support during the event. The only down side was that some participants that had signed up for the event did not turn up on the day and some of them did not even call to inform us, this is a shame for the other participants who have travelled long distances for this event.

A big thank you to all the volunteers who ran the event – Manoramaji, Raji, Vineet, Shonali, Hema, Jania, Maya, Shiekha and Sanjiveji. Thank you to Amitbhai, Acharyaji, Saantiji, Paven and Ranaji for helping the days before.

Thank you Harishji and Shankar Sweet centre for the catering.

Acharya ji started the event with prayer followed by speed dating format of introducing participants to each other.

By the end of event there have been quite a few interests shown between the participants and we had around 16 matches on the day. Whom we hope will change into life long partnerships.

Event started at 11.30am and finished by 3.00pm followed by late lunch where participants had more time to know each other.

We will be arranging a similar get together next year. Please watch out for more information in forthcoming monthly Aryan Voice.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org
Or
Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge has increased to £90 from 1st July 2014.

- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately.**

- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy*

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.

- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.

- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.

- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

Note to all Members

Dear Members of Arya Samaj West Midlands

For the last 10 years Arya Samaj West midlands has not charged entry for our Diwali Function. The whole event was totally free of charge to its members, but due to the lack of funds this year Arya Samaj West Midlands is not in the position to continue this tradition with sad regret.

This year we are charging **£20** a ticket. We have tried to keep the price down to a minimum, but this year your Arya Samaj Charity needs your support financially.

Please buy a ticket and come and join Arya Samaj West Midlands to celebrate Diwali with Friends and loved ones. Let's enjoy this Diwali with a Dinner and Dance.

In future when we become financially stable, we will go back and celebrate Diwali without any charge here at the Arya Samaj West Midlands.

Many thanks for understanding our present situation.

Kind regards

Dr. Narendra Kumar
Chairman - The Board of Trustees
Arya Samaj West Midlands

Celebrate Diwali

At
The Arya Samaj Bhawan
188 Inkerman Street

On
Saturday 8th November 2014

6.30pm
Havan followed by an
Evening of Dinner (Vegetarian) & Dance
(Classical and non classical)
And
Sangeet and Gazals

Tickets £20 per person

To book or for further information call
0121 359 7727

News

Condolences:

- **Mrs. Rewat Aggarwal for the loss of her husband Late Mr. Harish Chander Aggarwal.**
- **Mr. Syam Sunder Sarna (Urf Mr. Ashok Sarna) and family for the loss of their mother (90) Late Mrs. Raj Kaushalya Sarna.**
- **Mr. Inderjit Marwah & Mr. Satya Prakash Gupta for the loss of their own relatives Late Mr. Prem Sagar Khullar Montreal Canada f/o Mr. Fabrice Raju khullar London** and **Late Mr. Gurdeal puri Nagpur (India)**
- **Dr. (Mrs.) Renu Rastogi on 23rd death annivarsary of her beloved husband Late Dr. Devendra Natha Rastogi.**
- **Homage to Late Mr. Hari krishan Datta on his 30 th death anniversary from his beloved wife Mrs. Ved Datta , his children, relatives and Arya Samaj West Midlands for his outstanding contributions for this Arya Samaj in his active life .**

Congratulations:

- **Mr. Pulkit and Mrs. Akshata Ahuja (Manchester) for naming ceremony of their girl-child who has been named by Anika Promila Ahuja.**
- **Dr. Gautam Rajkhoiya and Dr. Madhurima for their children's good education in university.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

Mr. J.G. & Mrs. Meena Bector	**£11**
Mr. Vinod Gulati (Rishi Langar)	**£125**
Mr. Rajiv Datta	**£21**
Mrs. Ved Datta (Rishi Langar)	**£165**
Mr. Sat Paul Vohra (GMY)	**£15**
Dr. (Mrs.) Renu Rastogi (includes Rishi Langar)	**£1196**
Mr. Swaraj and Mrs. Vijay Lakshmi Kumar	**£31**
Mrs. Rama Joshi (Rishi Langar)	**£121**
Mr. Inderjit Marwah (includes Rishi Langar)	**£265**
Fabrice Khullar	**£100**
Om Joshi	**£11**
Mr. Krishan Larroiya	**£21**
Mrs. Kanti Bajaj	**£51**

Donations to Arya Samaj WM through the Priest – services

Dr. Gautam Rajkhoya	**£50**
Mrs. Rewat Aggarwal	**£50**
Mr. Pulkit Ahuja	**£101**

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 2nd November 2014 and 7th December 2014.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org